

संकल्पना- झेन की देन

सारांश
विषयवस्तु
चित्रात्मकता

(लेखक परिचय)

लेखक - रवींद्र केलेकर
जन्म - 7 मार्च 1925 (कोंकण)

पाठ प्रवेश

ऐसा माना जाता है कि कम शब्दों में अधिक बात कहना एक कविता का सबसे महत्वपूर्ण गुण होता है। जब कभी इस गुण का प्रयोग कवियों के साथ-साथ लेखक भी करे अर्थात् जब कभी कविताओं के साथ-साथ गद्य में भी इस गुण (कम शब्दों में अधिक बात कहने) का प्रयोग हो, तो उस गद्य को पढ़ने वाले को यह मुहावरा याद आ ही जाता है - 'सार-सार को गहि रहे, थोथा देय उड़ाय' अर्थात् सही और सार्थक (जिनका कोई अर्थ हो) शब्दों का प्रयोग करके और निरर्थक (जिनका कहीं कोई अर्थ न हो) शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।



आसान शब्दों का प्रयोग करना और कम शब्दों में अधिक शब्दों का अर्थ निकालने वाले वाक्यों का प्रयोग करना बहुत कठिन काम है। फिर भी लेखक इस काम को करते आए हैं। सूक्ति कथाएँ, आगम कथाएँ, जातक कथाएँ, पंचतंत्र की कहानियाँ इसी तरह से लिखी गई कथाएँ और कहानियाँ हैं। यही काम प्रस्तुत पाठ के लेखक रवींद्र केलेकर ने

भी किया है।

लेखक ने प्रस्तुत पाठ में जो प्रसंग प्रस्तुत किए गए हैं उनमें भी लेखक पढ़ने वालों से उम्मीद कर रहे हैं कि वे उनके द्वारा कहे गए काम शब्दों में अधिक अर्थों को निकालें। ये प्रसंग केवल पढ़ने के ही लिए नहीं हैं, बल्कि एक जागरूक और सक्रिय नागरिक बनने की प्रेरणा भी देते हैं।



झेन की देन बौद्ध दर्शन में वर्णित ध्यान की उस पद्धति की याद दिलाता है जिसके कारण जापान के लोग आज भी अपनी व्यस्ततम दिन भर के कामों के बीच भी कुछ चैन भरे या सुकून के पल हासिल कर ही लेते हैं।

झेन की देन

जापान में मैंने अपने एक मित्र से पूछा, "यहाँ के लोगों को कौन सी बीमारियाँ अधिक होती हैं?" "मानसिक", उसने जवाब दिया, "यहाँ के अस्सी फीसदी लोग मनोरुग्ण हैं।" "इसकी क्या वजह है?"

कहने लगे, "हमारे जीवन की रफ़्तार बढ़ गई है। यहाँ कोई चलता नहीं, बल्कि दौड़ता है। कोई बोलता नहीं, बकता है। हम जब अकेले पड़ते हैं तब अपने आपसे लगातार बड़बड़ाते रहते हैं। अमेरिका से हम प्रतिस्पर्धा करने लगे। एक महीने में पूरा होने वाला काम एक दिन में ही पूरा करने की कोशिश करने लगे। वैसे भी दिमाग की रफ़्तार हमेशा तेज़ ही रहती है। उसे 'स्पीड' का इंजन लगाने पर वह हजार गुना अधिक रफ़्तार से दौड़ने लगता है। फिर एक क्षण ऐसा आता है जब दिमाग का तनाव बढ़ जाता है और पूरा इंजन टूट जाता है। यही कारण है जिससे मानसिक रोग यहाँ बढ़ गए हैं। "

फीसदी - प्रतिशत



मनोरुग्ण - मानसिक रोग /मानसिक बीमारी

रफ़्तार - तेज़ी

प्रतिस्पर्धा - प्रतियोगिता /मुकाबला

तनाव - द्वेष की स्थिति /टेंशन



लेखक ने जापान के अपने एक मित्र से पूछा कि वहाँ के लोगों को सबसे अधिक कौन सी बीमारियाँ होती हैं। इस पर लेखक के मित्र में जवाब दिया कि जापान के लोगों को सबसे अधिक मानसिक बीमारी का शिकार होना पड़ता है। जापान के अस्सी प्रतिशत लोग मानसिक बिमारी से ग्रस्त हैं। लेखक के इस मानसिक बिमारी के इतना अधिक होने की वजह पूछने पर लेखक के मित्र ने उत्तर दिया कि उनके जीवन की तेजी औरों से अधिक है। जापान में कोई आराम से नहीं चलता ,बल्कि दौड़ता है अर्थात सब एक दूसरे से आगे जाने की सोच रखते हैं।



जापान में कोई भी व्यक्ति आराम से बात नहीं करता ,वे लोग केवल काम की ही बात करते हैं। यहाँ तक की जब जापान के लोग कभी अपने आप को अकेला महसूस करते हैं तो वे किसी और से नहीं बल्कि अपने आप से ही बातें करते हैं। जापान के लोग अमेरिका से प्रतियोगिता में लग गए जिसके कारण वे एक महीने में पूरा होने वाला काम एक दिन में ही खत्म करने की कोशिश करने लगे। वैसे भी दिमाग हमेशा तेज ही रहता है और अगर उसमें स्पीड का इंजन लगा दिया जाए तो उसकी राफ्तार में कई हजार गुना तेजी आ सकती है और वह दौड़ने लगता है। फिर एक समय ऐसा भी आता है जब दिमाग थक जाता है और टेंशन में आ कर पूरा इंजन टूट जाता है। यही कारण है कि जापान के लोगो में मानसिक बिमारी इतनी अधिक फैल गई है। शाम को वह मुझे एक 'टी-सेरेमनी' में ले गए। चाय पीने की यह एक विधि है। जापानी में उसे चा-नो-यू कहते हैं।

वह एक छः मंजिली इमारत थी जिसकी छत पर दफ्ती की दीवारोंवाली और तातामी (चटाई) की ज़मीनवाली एक सुंदर पर्णकुटी थी। बाहर बेढब-सा एक मिट्टी का बर्तन था। उसमें पानी भरा हुआ था। हमने अपने हाथ-पाँव इस पानी से धोए। तौलिए से पोंछे और अंदर गए। अंदर 'चाज़ीन' बैठा था। हमें देखकर वह खड़ा हुआ। कमर झुका कर उसने हमें प्रणाम किया। दो....झो...(आइए, तशरीफ़ लाइए) कहकर स्वागत किया।

बैठने की जगह हमें दिखाई। अँगीठी सुलगाई। उस पर चायदानी रखी। बगल के कमरे में जाकर कुछ बरतन ले आया। तौलिए से बरतन साफ किए। सभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण ढंग से कीं कि उसकी हर भंगिमा से लगता था मानो जयजयवंती के सुर गूँज रहे हों। वहाँ का वातावरण इतना शांत था कि चायदानी के पानी का खदबदाना भी सुनाई दे रहा था।



टी-सेरेमनी - जापान में चाय पीने का विशेष आयोजन

चा-नो-यू - जापान ने टी-सेरेमनी का नाम

दफ्ती - लकड़ी की खोखली सरकने वाली दीवार जिस पर चित्रकारी होती है

पर्णकुटी - पत्तों की बनी कुटिया

बेढब-सा - बेडौल-सा



चाज़ीन - जापानी विधि में चाय पिलाने वाला

गरिमापूर्ण - सलीके से

भंगिमा - मुद्रा

जयजयवंती - एक राग का नाम

खदबदाना - उबलना

(यहाँ लेखक जापान की चाय पीने की विशेष विधि का वर्णन कर रहे हैं)



लेखक कहते हैं कि एक शाम को उनका जापानी दोस्त उन्हें जापान के चाय पीने के एक विशेष आयोजन में ले गया। जापान में चाय पीने की इस विधि को चा-नो-यू कहा जाता है। लेखक और उनका मित्र चाय पीने के आयोजन के लिए जहाँ गए थे वह एक छः मंजिल की इमारत थी। उसकी छत पर एक सरकने वाली दीवार थी

जिस पर चित्रकारी की गई थी और पत्तों की एक कुटिया बनी हुई थी जिसमें जमीन पर चटाई बिछी हुई थी। उसके बाहर बैडोल-सा मिट्टी का एक बरतन था, जिसमें पानी भरा हुआ था। लेखक और उनके मित्र ने उस पानी से हाथ-पाँव धोए और तौलिए से हाथ-पाँव पोंछ कर अंदर गए। अंदर चाय देने वाला एक व्यक्ति था जिसे चाजीन कहा जाता है। वह लेखक और उनके मित्र को देखकर खड़ा हो गया। कमर झुका कर उसने लेखक और उनके दोस्त को प्रणाम किया।



उसने दो... झो...अर्थात आइए, तशरीफ़ लाइए ऐसा कह कर उनका स्वागत किया। उसने उन्हें बैठने की जगह दिखाई। अँगीठी को जलाया और उस पर चाय बनाने वाला बरतन रख दिया। वह साथ वाले कमरे में गया और कुछ बरतन ले कर आया। फिर तौलिए से बरतन साफ किए। ये सारा काम उस व्यक्ति ने बड़े ही सलीके से पूरा किया और उसकी हर एक मुद्रा या काम करने के ढंग से लगता था कि जैसे जयजयवंती नाम के राग की धुन गूँज रही हो। उस जगह का वातावरण इतना अधिक शांत था कि चाय बनाने वाले बरतन में उबलते हुए पानी की आवाज़ें तक सुनाई दे रही थीं।



चाय तैयार हुई। उसने वह प्यालों में भरी। फिर वे प्याले हमारे सामने रख दिए गए। वहाँ हम तीन मित्र ही थे। इस विधि में शांति मुख्य बात होती है। इसलिए वहाँ तीन से अधिक आदमियों को प्रवेश नहीं दिया जाता। प्याले में दो घूँट से अधिक चाय नहीं थी। हम ओठों से प्याला लगाकर एक-एक बूँद चाय पीते रहे। करीब डेढ़ घंटे तक चुसकियों का यह सिलसिला चलता रहा। पहले दस-पंद्रह मिनट तो मैं उलझन में पड़ा। फिर देखा दिमाग की रफ़्तार धीरे-धीरे धीमी पड़ती जा रही है। थोड़ी देर में बिल्कुल बंद भी हो गई। मुझे लगा, मानो अनंतकाल मैं जी रहा हूँ। यहाँ तक की सन्नाटा भी मुझे सुनाई देने लगा।

चुसकी - होंठों से कोई तरल पदार्थ थोड़ा-थोड़ा तथा धीरे-धीरे करके पीने की क्रिया का भाव

सिलसिला - क्रम

उलझन - असमंजस की स्थिति

अनंतकाल - कभी खत्म न होने वाला समय

सन्नाटा - मौन / शांति

(यहाँ लेखक जापान के चाय के समारोह में अपना पहला अनुभव व्यक्त कर रहा है)

लेखक कहते हैं कि चाय बनाने वाले ने चाय तैयार की। उसने चाय को प्यालों में भरा और फिर उन प्यालों को लेखक और उनके मित्रों के सामने रख दिया। वहाँ लेखक और उनके मित्रों के अलावा कोई नहीं था वे केवल तीन ही व्यक्ति थे। जापान में इस चाय समारोह की सबसे खास बात शांति होती है। इसलिए वहाँ तीन से ज्यादा व्यक्तियों को नहीं माना जाता। उन चाय के प्यालों में दो-दो घूँट से ज्यादा चाय नहीं थी। लेखक और उनके मित्र प्यालों को अपने होंठों से लगा कर एक-एक बूँद चाय पी रहे थे। लेखक कहते हैं कि वे करीब डेढ़ घंटे तक प्यालों से चाय को धीरे-धीरे पीते रहे। पहले दस-पंद्रह मिनट तो लेखक को बहुत परेशानी हुई।



लेकिन धीरे-धीरे लेखक ने महसूस किया कि उनके दिमाग की रफ्तार कम होने लगी है। और कुछ समय बाद तो लगा कि दिमाग बिल्कुल बंद ही हो गया है। लेखक को लगा जैसे वह कभी न खत्म होने वाले समय में जी रहा है। यहाँ तक की लेखक का मन इतना शांत हो गया था की बाहर की शांति भी शोर लग रही थी।

अकसर हम या तो गुज़रे हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपने देखते रहते हैं। हम या तो भूतकाल में रहते हैं या भविष्यकाल में।

असल में दोनों काल मिथ्या हैं। एक चला गया है, दूसरा आया नहीं है। हमारे सामने जो वर्तमान क्षण है, वही सत्य है। उसी में जीना चाहिए। चाय पीते-पीते उस दिन मेरे दिमाग से भूत-भविष्य दोनों काल उड़ गए थे। केवल वर्तमान क्षण सामने था। और वह अनंतकाल जितना विस्तृत था।

जीना किसे कहते हैं, उस दिन मालूम हुआ।

झेन परंपरा की यह बड़ी देन मिली है जापानियों को!

मिथ्या - झूठ

विस्तृत - बहुत अधिक फैला हुआ

झेन परंपरा - ध्यान लगाने की परंपरा

लेखक हमें बताना चाहते हैं कि हम लोग या तो बीते हुए दिनों की अच्छी-बुरी यादों में उलझ कर रह जाते हैं या फिर आने वाले समय के बारे में सपने देखने लगते हैं। हम लोग या तो बीते हुए दिनों में रहते हैं या आने वाले दिनों में। जबकि दोनों ही समय झूठे होते हैं। वो इसलिए क्योंकि एक बीत चुका होता है और दूसरा अभी आया भी नहीं होता। तो बात आती है कि सच क्या है तो लेखक कहते हैं कि जो समय अभी चल रहा है वही सच है। और यह समय कभी न खत्म होने वाला और बहुत अधिक फैला हुआ है।

लेखक कहते हैं कि जीना किसे कहते यह उनको चाय समारोह वाले दिन मालूम हुआ। जापानियों को ध्यान लगाने की यह परंपरा विरासत में देन में मिली है।